साधना ठकुरेला

जन्मतिथि- 06.03.1967
जन्मस्थान - हाथरस
पिता का नाम- श्री राम प्रसाद राना
माता का नाम- श्रीमती राजेश्वरी राना
मोबाइल नम्बर - 6377519070

चलती रहती जिंदगी, ज्यों कागज़ की नाव ।
लोग भटकते लक्ष्य से, करते नहीं चुनाव ।।
करते नहीं चुनाव, हवा खे कर ले जाती ।
कुछ हो जाती पार, कहीं पर भँवर डुबाती ।
कहे 'साधना' सत्य, करो मत कोई गलती ।
हाथ रखो पतवार, नाव तब ढंग से चलती ।।

****

चढ़ती चींटी सर्वदा, अनथक करे प्रयास ।
ले जाती है शीर्ष तक, बस मंजिल की आस ।।
बस मंजिल की आस, सदा श्रम करती जाती ।
हो जाता श्रम साध्य, और मंजिल को पाती ।
कहे 'साधना' सत्य, लगन ही आगे बढ़ती ।
देती श्रम की सीख, तुच्छ चींटी जब चढ़ती ।।

****

जाला मकड़ी बुन रही, करके यही विचार ।
कीट फ़सेंगे जाल में, कर लूँ सहज शिकार ।।
कर लूँ सहज शिकार, मजे से पेट भरुँगी ।
ऐश करूँ दिन-रात, नहीं अब कभी मरूंगी ।
खुद फँस खुद के जाल, सहज बन गयी निवाला ।
ऐसे ही इंसान, बनाता रहता जाला।।

****

गढ़ता काँटा पैर में, देता भारी पीर ।
तीखी वाणी भी सदा, मन को देती चीर ।।
मन को देती चीर, घाव ऐसा हो जाता ।
होते यत्न अनेक, नहीं फिर भी भर पाता ।
कहे 'साधना' सत्य, विवेकी बस यह पढ़ता ।
तन, मन रहे सचेत, न कोई काँटा गढ़ता ।।

****

नेकी कर के भूल जा, मत कर उसको याद ।
मिल जायेगा फल तुझे, कुछ दिन के ही बाद ।।
कुछ दिन के ही बाद, मिले यश, मान, बड़ाई ।
दे सुख अमित, अपार, यही है नेक कमाई ।
कहे 'साधना' सत्य, याद रखना जाने की ।
मानव बनो प्रबुद्ध, करो तुम हर दिन नेकी ।।

****

पीड़ा दें संसार में, कुछ अपने ही कर्म ।
लेकिन जो अनभिज्ञ हैं, नहीं जानते मर्म ।।
नहीं जानते मर्म, दोष ईश्वर पर मढ़ते ।
कोसें अपना भाग्य, कहानी नित नव गढ़ते ।
कहे 'साधना' सत्य, सुखों की बाजे वीणा ।
करते रहो सुकर्म, हरे ईश्वर सब पीड़ा ।।

****

आजादी की आड़ में, नारी हुई असभ्य ।
रँगी पश्चिमी रंग में, खुद को समझे सभ्य ।।
खुद को समझे सभ्य, भूल बैठी मर्यादा ।
सभ्य जनों की सीख, न उसको भाती ज्यादा ।
कहे 'साधना' सत्य, कर रही खुद बर्बादी ।
विस्मित हैं सब लोग, भला ये क्या आजादी ।।

****

सपने देखो जागकर, और करो साकार ।
अनथक परिश्रम हो अगर, लेंगे वे आकार ।।
लेंगे वे आकार, नया निर्माण करोगे ।
हासिल होगा लक्ष्य, राष्ट्र का भला करोगे ।
कहे 'साधना' सत्य, कर्मफल होते अपने।
जो भी लेता ठान, सत्य हो जाते सपने ।।

****

सुख-सुविधा ज्यादा मिली, रोगी हुआ शरीर।
आलस बढ़ता ही गया, भोग रहे अब पीर ।।
भोग रहे अब पीर, सुखों का करें दिखावा ।
हो यथार्थ से दूर, स्वयं से करें छलावा ।
कहे 'साधना' सत्य, न रहती कोई दुविधा ।
श्रम से बने शरीर, यही सच्ची सुख-सुविधा ।।

****

रोटी, कपड़ा और घर, सबको ही दरकार ।
इन तीनों ही वस्तु पर, सबका हो अधिकार ।।
सबका हो अधिकार, और सब खुशी मनायें ।
स्वाभिमान के साथ, सभी जीवन जी पायें ।
कहे 'साधना' सत्य, बात यह इतनी छोटी ।
जो कर ले पुरुषार्थ, मिले घर, कपड़ा, रोटी ।।

****